शांतिकुंज भगवान की नाव है।

1984 में परम पूज्य गुरुदेव के ऊपर आसुरी शक्तियों का प्रहार हुआ। उनपर पिस्टल से फायर किया गया, गोली नहीं चली। चाकु से कई बार हमला किया, पूज्य गुरुदेव के शरीर पर कई जख्म लगे, दयालु गुरुदेव ने उस असुर को भाग जाने का अवसर दिया। वह वहाँ से भागा भी पर अन्ततः अपने द्वारा प्रयुक्त एक बम की चपेट में आकर मारा गया।

कुछ ही दिन बाद अचानक एक दिन परम पूज्य गुरुदेव एक सप्ताह के एकांतवास में चले गये। गुरुदेव पर हमले के बाद प्रशासन ने उनकी सुरक्षा के लिए एक सिपाही तैनात कर दिया, जिसका नाम था भीम। गुरुदेव एकांत में चले गये, उनके कमरे को बाहर से ताला लगाकर बंद कर दिया गया। पहरे पर दो लोग सदैव तैनात रहते थे, उनमें से एक थे शान्तिकुन्ज के वरिष्ठ कार्यकर्ता आद0 श्री महेन्द्र शर्मा जी एवं दूसरे सिपाही भीम। एक दिन सिपाही भीम ने **अखण्ड ज्योति पत्रिका के अपनों से अपनी बात लेख में पढ़ा-** कि गुरुदेव एक सप्ताह के लिए हिमालय गये और वहाँ के ऋषियों को कुम्भ में आने का निमंत्रण दिया। ऋषियों ने भी निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया। इस लेख को पढ़कर सिपाही भीम चौंका। ये कैसे संभव है? गुरुदेव अपने कमरे में बंद थे हिमालय कब गये।

सिपाही भीम परम वंदनीया माता जी के पास गया, वहाँ देखता है कि वंदनीया माता जी भी उसी लेख को पढ़ रही हैं। भीम ने अपनी दुविधा कह सुनाई। माता जी ने कहा बेटा अखण्ड ज्योति में तो लिखा हुआ है कि गुरूदेव हिमालय गये थे। भीम ने कहा माता जी ये कैसे संभव है, मैं वहीं गुरुदेव के कमरे के बाहर ही पहरा देता रहा। अगर यह लेख पुलिस के बड़े अधिकारी पढ़ लेंगे तो मेरी नौकरी चली जायेगी। मैं प्रति दिन कोतवाली के रजिस्टर में रिपोर्ट लिखकर आता हूँ कि

गुरुदेव अपने कमरे में हैं और सुरक्षित हैं। इसपर वंदनीया माता जी ने कहा बेटा तुम्हारे कुल खानदान में कोई कृष्ण जी हुए हैं। भीम ने कहा जी माता जी। माता जी ने आगे प्रश्न किया कहाँ जन्में? उत्तर मिला मथुरा की जेल में। माता जी ने पुनः प्रश्न किया, मिले कहाँ? सिपाही भीम ने कहा गोकुल में। इसपर माता जी ने कहा बेटा मथुरा की जेल में बहुत सारे सिपाही थे फिर कृष्ण गोकुल पहुँच गये, बेटा सिपाहियों के रहते जब कृष्ण जी मथुरा जेल से गोकुल जा सकते हैं तो गुरुदेव भी बंद कमरे से हिमालय जा सकते हैं।

उपरोक्त कहानी के आगे की कड़ी परम पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित "हमारी वसीयत और विरासत" पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय "चौथा और अंतिम निर्देशन" से जुडती है.

हमारी वसीयत और विरासत पुस्तक के 19 वें अध्याय में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं- चौथी बार गत वर्ष पुनः हमें एक सप्ताह के लिए हिमालय बुलाया गया। सन्देश पूर्ववत् सन्देश रूप में आया। आज्ञा के परिपालन में विलम्ब कहाँ होना था। हमारा शरीर सौंपे हुए कार्यक्रमों में खटता रहा है, किन्तु मन सदैव दुर्गम हिमालय में अपने गुरु के पास रहा है। कहने में संकोच होता है, पर प्रतीत ऐसा भी होता है कि गुरुदेव का शरीर हिमालय में रहता है और मन हमारे इर्द-गिर्द मँडराता रहता है। उनकी वाणी अन्तराल में प्रेरणा बनकर गूँजती रहती है। उसी चाबी के कसे जाने पर हृदय और मस्तिष्क का पेण्डुलम धड़कता रहता है।

यात्रा पहली तीनों बार की ही तरह कठिन रही। **इस बार साधक की परिपक्वता के कारण सूक्ष्म शरीर को आने का निर्देश मिला था।** उसी काया को एक साथ तीन परीक्षाओं को पुनः देना था। साधना क्षेत्र में एक बार उत्तीर्ण हो जाने पर पिसे को पीसना भर रह जाता है। मार्ग देखा भाला था दिनचर्या बनी बनाई थी। गोमुख के साथ मिल जाना और तपोवन तक सहज जा पहुँचना यही क्रम पुनः चला। उनका सूक्ष्म शरीर कहाँ रहता है, क्या करता है यह हमने कभी नहीं पूछा। हमें तो

भेंट का स्थान मालूम है, मखमली गलीचा। ब्रह्मकमल की पहचान हो गई थी। उसी को ढूँढ़ लेते और उसी को प्रथम मिलन पर गुरुदेव के चरणों पर चढ़ा देते।

पूज्य गुरुदेव इस एक सप्ताह के हिमालय प्रवास के विषय में सूक्ष्म शरीर से जाने की बात लिखते हैं। उसी समय सिपाही भीम पूज्य गुरुदेव के कमरे के बाहर ताला लगे दरबाजे पर पहरा देता रहता है।

आगे पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि- उनके मार्गदर्शक ने इस बार विषेश रूप से सूक्ष्मीकरण साधना हेतु मार्गदर्शन और आदेश दिया। **मार्ग दर्शक ने कहा .....**

"तुम्हें एक से पाँच बनना है। पाँच रामदूतों की तरह, पाँच पाण्डवों की तरह काम पाँच तरह से करने हैं, इसलिए इसी शरीर को पाँच बनाना है। एक पेड़ पर पाँच पक्षी रह सकते हैं। तुम अपने को पाँच बना लो। इसे सूक्ष्मीकरण कहते हैं। पाँच शरीर सूक्ष्म रहेंगे, क्योंकि व्यापक क्षेत्र को संभालना सूक्ष्म सत्ता से ही बन पड़ता है। जब तक पाँचों परिपक्व होकर अपने स्वतंत्र काम न सँभाल सकें, तब एक इसी शरीर से उनका परिपोषण करते रहो। इसमें एक वर्ष भी लग सकता है एवं अधिक समय भी। जब वे समर्थ हो जाएँ तो उन्हें अपना काम करने हेतु मुक्त कर देना। समय आने पर तुम्हारे दृश्यमान स्थूल शरीर की छुट्टी हो जाएगी।"

यह दिशा निर्देशन हो गया। करना क्या है? कैसे करना है? इसका प्रसंग उन्होंने अपनी वाणी में समझा दिया। इसका विवरण बताने का आदेश नहीं है, जो कहा गया है, उसे कर रहे हैं। संक्षेप में इसे इतना ही समझना पर्याप्त होगा-

(1)-वायु मण्डल का संशोधन,

(2)-वातावरण का परिष्कार,

(3)-नवयुग का निर्माण,

(4)-महाविनाश का निरस्तीकरण समापन,

(5)-देवमानवों का उत्पादन-अभिवर्धन।

‘‘यह पाँचों काम किस प्रकार करने होंगे, इसके लिए अपनी सत्ता को पाँच भागों में कैसे विभाजित करना होगा, भागीरथ और दधीचि की भूमिका किस प्रकार निभानी होगी, इनके लिए लौकिक क्रिया-कलापों से विराम लेना होगा। बिखराव को समेटना पड़ेगा। यही है-सूक्ष्मीकरण।’’

मित्रों! इस पैरा को ध्यान से पढ़ें......

मार्गदर्शक ने कहा ....

‘‘इसके लिए जो करना होगा, समय-समय पर बताते रहेंगे। योजना को असफल बनाने के लिए, इस शरीर को समाप्त करने के लिए जो दानवी प्रहार होंगे, उससे बचाते चलेंगे। पूर्व में हुए आसुरी आक्रमण की पुनरावृत्ति कभी भी किसी रूप में सज्जनों-परिजनों पर प्रहार आदि के रूप में हो सकती है। पहले की तरह सबमें हमारा संरक्षण साथ रहेगा। अब तक जो काम तुम्हारे जिम्मे दिया है, उसे अपने समर्थ सुयोग्य परिजनों के सुपुर्द करते चलना, ताकि मिशन के किसी काम की चिता या जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर न रहे।

जिस महा परिवर्तन का ढाँचा हमारे मन में है, उसे पूरा तो नहीं बताते, पर उसे समयानुसार प्रकट करते रहेंगे। ऐसे विषम समय, में उस रणनीति को समय से पूर्व प्रकट करने से उद्देश्य की हानि होगी।’’

इस बार हमें अधिक समय रोका नहीं गया। बैटरी चार्ज करके बहुत दिनों तक काम चलाने वाली बात नहीं बनी। उन्होंने कहा कि ‘‘हमारी ऊर्जा अब तुम्हारे पीछे अदृश्य रूप से चलती रहेगी। अब हमें एवं जिनको आवश्यकता होगी, उन ऋषियों को तुम्हारे साथ सदैव रहना

और हाथ बँटाते रहना पड़ेगा। तुम्हें किसी अभाव का, आत्मिक ऊर्जा की कमी का कभी अनुभव नहीं होगा। वस्तुतः यह 5 गुनी और बढ़ जाएगी।"

हमें विदाई दी गई और हम शान्तिकुंज लौट आए। हमारी सूक्ष्मीकरण सावित्री साधना राम नवमी 1984 से आरम्भ हो गई।

मित्रों! जहाँ विषेश रूप से ध्यान से पढ़ने का आग्रह आपसे किया गया उस पैरा में लिखा है- गुरुदेव के मार्गदर्शक ने उनसे कहा कि आगे भी आसुरी शक्तियों के हमले होते रहेंगे, पहले हुए आसुरी आक्रमण की पुनरावृत्ति होती रहेगी किसी भी रूप में सज्जनों एवं परिजनों के ऊपर भी, पर हम सदैव तुम्हारे साथ खड़े रहेंगे।

मित्रों! आसुरी शक्तियों के आक्रमण की चेतावनी एवं मार्गदर्शक सत्ता का संरक्षण सदैव मिलने का आश्वासन आगे आने वाले समय में देखने को मिला। **पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्मीकरण साधना के पहले उनपर चाकु से हमला हुआ, गुरुदेव के सूक्ष्मीकरण साधना के दौरान उनके परिजनों पर आसुरी शक्ति का आक्रमण 1986 में हुआ जिसमें प्रज्ञानन्द और उनके जैसे कुछ लोगों को आसुरी शक्तियों ने दिग्भ्रमित कर राह से भटकया एवं विचार क्रान्ति अभियान को हानि पहुँचाने का प्रयास किया। फिर 1999 बलराम सिह परिहार, एवं वर्तमान में कुछ और लोग आसुरी शक्तियों के वाहक बन गये।**

प्रश्न है, आसुरी शक्तियों ने इनको अपना आधार क्यों बनाया? सही उत्तर केवल गुरुदेव को ही पता है, लेकिन अपनी छोटी बौनी सी बुद्धि से बस इतना ही कहेंगे, जहाँ गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण में कमी आयेगी वहीं आसुरी शक्तियों का वास होगा। **गुरु की शक्ति शिष्यों के सिर पर छत्र की तरह सदैव तनी रहती है। उस शक्ति रूपी छत्र की मजबूती गुरु में पूर्ण विश्वास, पूर्ण श्रद्धा एवं पूर्ण समपर्ण से ही सम्भव**

है। गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास, समपर्ण की कमी उस छत्र को, उस रक्षा कवच को छिन्न भिन्न कर देती है, उसे नष्ट कर देती है, तब शिष्य आसुरी शक्तियों का शिकार बन जाता है।

गुरुदेव के मार्गदर्शक ने आगे कहा- **कि अबतक जो काम तुम्हारे जिम्मे दिया है, उसे अपने समर्थ, सुयोग्य परिजनों के सुपुर्द करते चलना, ताकि मिशन के किसी काम की चिता या जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर न रहे।**

मित्रों! गुरुदेव ने **समर्थ और सुयोग्य व्यक्तियों को अपनी जिम्मेदारी सौंपी है वो सभी अपने अपने कामों में पूरी श्रद्धा और समपर्ण के साथ लगे हुये हैं।** लेकिन इनदिनों कुछ लोग जो अपनी कमजोर आत्मबल और कमजोर मनःस्थिति के कारण आसुरी शक्तियों के प्रभाव में आ गये हैं, उन्हें सब लोग गलत दीखते हैं। आसुरी प्रभाव में आये इनके दिल-दिमाग को देवदूतों में अनेकों खोट नजर आता है। **1986 में आसुरी शक्ति के प्रभाव में आये लोकेश अर्थात् प्रज्ञानन्द को गुरुदेव की शक्ति भी दिखाई देनी बंद हो गई थी। प्रज्ञानन्द ने यह कहना शुरु कर दिया था, कि गुरुदेव में कोई शक्ति नहीं है, मैं उनसे ज्यादा समर्थ और शक्तिशाली हूँ। आसुरी शक्तियों के प्रभाव में जकड़ी बुद्धि को जब गुरुदेव ही सामान्य नज़र आते थे, तो वर्तमान के कालनेमियों को गुरुदेव के योग्य एवं समर्थ शिष्य नगण्य ही दिखेंगे।**

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शक ने आगे कहा- **सूक्ष्मीकरण साधना से तुम्हें अपने आप को पाँच भागों में विभक्त कर लेना है और उन पाँचों को स्वतंत्र कर देना है। आगे की प्रक्रिया में मैं हमेशा ही तुम्हारे साथ रहूँगा साथ ही अनेक ऋषियों का भी साथ तुम्हें मिलता रहेगा।**

मित्रों! गुरुदेव, युग निर्माण मिशन को भगवान का मिशन यूँ ही नहीं कहते थे। गुरुदेव कहते थे "यह भगवान की योजना है, इसे भगवान ही चला रहा है और हजारों वर्ष तक चलाता रहेगा। **मित्रों!**

जिस मिशन को पूज्य गुरुदेव के पाँच समर्थ शरीर, उनके मार्गदर्शक सत्ता की शक्ति, अनेक ऋषियों की शक्ति चला रही हो, वह कैसे अपनी पूर्णता तक नहीं पहुँचेगी।

सच मे यह भगवान का ही युग निर्माण मिशन है। अनेकों झंझावातों को यूँ सहज ही झेल जाता है और जरा भी डगमग नहीं होता। हाँ, जो उथली मानसिकता के होंगे, जिनका विश्वास गुरु से डगमगा जायेगा, जिनकी श्रद्धा डोलने लगेगी, खण्डित हो जायेगी, जिनका समर्पण डोल जायेगा वो भगवान की सुरक्षित नाव में से जरा सी हिचकोले में ही छलांग लगा देंगे और अवश्य डूब जायेंगे। **भगवान की सुरक्षित नाव की सवारी का एक ही माध्यम है, समर्थ गुरु के प्रति, श्रद्धा, समर्पण, विश्वास। जिनका ये सुरक्षा कवच टूटा वो आसुरी शक्तियों के शिकार हो देवदूत से दानव की श्रेणी में चले जायेंगे।** फिर ये भ्रष्ट दानव बुद्धि के लोग शोर मचा-मचा कर लोगों को डरा**येंगे**, कि नाव मे छेद हो गया है, यह नाव अब सुरक्षित नहीं है, यह पुरानी हो गई है, अगर इसमें सवार रहोगे तो अवश्य ही डूब जाओगे। कूद पड़ो। देखो हमलोग पहले ही कूद गये, तुम्हारा नाविक तुम्हें डुबो देगा आदि-आदि अनेकों प्रपंच रचते हैं। **इनदिनों वर्तमान के आसुरी शक्ति से प्रभावित कुछ दिग्भ्रमित लोग शान्तिकुंज रूपी गुरुदेव की नाव के विषय में भी इसी प्रकार की हवाबाजी करते रहते हैं।** ये कहते हैं यह शान्तिकुंज अब पहले जैसा नहीं रहा, गुरुदेव के द्वारा स्थापित प्राणशक्ति अब छिन्न कर दी गई है। आइये अब हम सब मिलकर शान्तिकुंज के नाविक को हटा कर गुरुदेव की शक्तियों को पुनः स्थापित करेंगे।

दुर्बुद्धि से ग्रस्त कालनेमि, आसुरी शक्तियों के वाहक, सुनो! इस धरा धाम पर कोई ऐसा जन्मा नहीं जो महर्षि विश्वामित्र की तपस्थली से उनकी तप ऊर्जा को समाप्त कर दे। जो पूज्य गुरुदेव की प्रचण्ड तप साधना को शान्तिकुंज की धरती से मिटा दे। जो परम वंदनीया माता जी के द्वारा शान्तिकुंज में आहूत 24 वर्ष तक चलने

वाली 24 महापुरश्चरण की तप साधना को मिटा दे। आसुरी शक्ति के प्रभाव में आये भ्रमित बुद्धि के लोग इन दिनों कहते हैं कि पूज्य गुरुदेव के शान्तिकुंज की ऊर्जा पुनः लौटानी है।

अंत में अपनों से अपनी बात- मित्रों! **हमारी वसीयत और विरासत पुस्तक पढ़ रहा था। उन्नीसवें अध्याय को पढ़ने के उपरान्त लोगों के भ्रम का कारण भी समझ आया।** जो लोग परिजनों को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं वास्तव में वे सभी आसुरी शक्ति के प्रभाव में हैं। **जिस युगनिर्माण मिशन को समर्थ और सफल बनाने के लिए हिमालय वासी समस्त ऋषि सत्तायें, स्वयं भगवान महाकाल, स्वयं जगत जननी माँ भगवती, सभी देव शक्तियाँ, भगवान महाकाल के पाँच वीरभद्र आदि जुटे पड़े हैं, उसका कोई कुछ भी अहित नहीं कर सकता। यह अभियान कभी अधूरा नहीं रहेगा, अपनी पूर्णता को अवश्य ही प्राप्त होगा।**

सावधान रहना है तो बस हम परिजनों को। हमारा समर्पण डिगा नहीं, हमारी श्रद्धा खण्डित हुई नहीं, हमारा विश्वास हिला नहीं की हम आसूरी शक्तियों के शिकार हो जायेंगे। और देव मानव बनते-बनते दानव की श्रेणी को प्राप्त होंगे। **गुरुदेव के युगनिर्माण मिशन की नाव भगवान की नाव है, ऋषियों की नाव है, महाकाल की नाव।** इस नाव पर श्रद्धा, समर्पण, विश्वास के साथ बैठे रहिये और यश और स्वर्ग के अधिकारी बनिये।